B-2
2-17
Ancient India

जैन धर्म

जैन शब्द की उत्पत्ति 'जिन' शब्द से हुई है। इसका अर्थ है जितेन्द्रिय अर्थात जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है।

जैन धर्म का विकास एवं उद्भव गंगाघाटी में ही क्यों?

- गंगा घाटी में कर्मकाण्डों की जटिलता का प्रवेश शुरू ही हुआ था।
- गंगा घाटी उपजाऊ थी
  ⇓
  दो प्रकार के उत्पादन
  - निर्वाह हेतु उत्पादन
  - अधिशेष उत्पादन
    ↓
    तर्क एवं चिंतन को जन्म दिया
    ↓
    इसके कारण गंगा-घाटी में लगभग 62 संप्रदायों का उद्भव हुआ।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

* जैन धर्म की ऐतिहासिकता अधिक प्राचीन है, इसमें हमें 24 तीर्थंकरों का सदर्भ मिलता है इनमें से 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की ऐतिहासिकता ज्ञात है।

* पार्श्वनाथ जैनधर्म के प्रथम ऐतिहासिक पुरुष हैं, इनका प्रतीक 'सांप का फन' है।

* महावीर स्वामी जैनधर्म के अंतिम ऐतिहासिक पुरुष हैं, इनका प्रतीक सिंह है।

तीर्थंकर
⇓
धाराओं को पार करने वाला

* प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का उल्लेख ऋग्वेद में है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

पार्श्वनाथ : 23वें तीर्थंकर

→ पिता - अश्वसेन (काशी नरेश)

→ माता - वामा

→ 30 वर्ष तक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के पश्चात सम्मेद पर्वत चले गए। 83 दिन तक कठोर तप करने के पश्चात 84वें दिन ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद पार्श्वनाथ 'निर्ग्रन्थ' कहलाए एवं इनके अनुयायी 'निग्रन्थी' कहलाए।

→ इनके प्रथम शिष्य इनके पिता एवं शिष्या माता थी।

→ महावीर स्वामी के माता-पिता भी पार्श्वनाथ के शिष्य थे।

→ पार्श्वनाथ को ज्ञान मिला : सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह (ये पार्श्वनाथ की शिक्षाएं हैं)

महावीर स्वामी

- पिता : सिद्धार्थ (कुण्डग्राम के मुखिया) वज्जि संघ से संबंधित
- माता : त्रिशला
- भाई : नंदिवर्धन
- बहन : सुभद्रा
- पत्नी : यशोदा
- पुत्री : प्रियदर्शिनी
- कल्पसूत्र के अनुसार, जब वर्धमान (महावीर) का जन्म हुआ, तब इनके पिता ने कुण्डग्राम का राजस्व माफ कर दिया।
- कल्पसूत्र के अनुसार, वर्धमान ने 30 वर्ष तक गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। तत्पश्चात अपने भाई नंदिवर्धन से अनुमति लेकर गृह त्याग किया। इस घटना को 'निष्क्रमण' कहा गया।
- गृहत्याग के बाद वर्धमान सर्वप्रथम कुण्डग्राम आए तत्पश्चात क्रमशः कुम्हारग्राम और ऋजुपालिका नदी के तट पर जृम्भिक ग्राम पहुँचे।
- जृम्भिक ग्राम में साल वृक्ष के नीचे 12 वर्ष तक तपस्या करने के पश्चात वर्धमान को ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसे कैवल्य कहा गया। अतः अब वर्धमान को 'कैवलिन' कहा गया।

KGS IAS

→ इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात वर्धमान को जिन कहा गया।

→ ज्ञान प्राप्ति के बाद वर्धमान अर्हत भिक्षु (पूज्य) कहलाने लगे।

→ जनता ने वर्धमान को 'महावीर' कहकर संबोधित किया।

वर्धमान के विभिन्न नाम :

1. महावीर
2. श्रमण : जो भय/शंका से मुक्त हो
3. केवलिन:
4. जिन
5. अर्हत भिक्षु
6. निगण्ठनाथपुत्र (निर्ग्रन्थनत्ल पुत्र)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* अपनी तपस्या के 12 वर्ष की अवधि में महावीर 6 वर्ष तक मक्खलि गोशाल (आजीवक संप्रदाय के संस्थापक) के आश्रम में रहें।

आजीवक संप्रदाय - नियतिवादी (भाग्यवादी) विचारधारा से उत्पन्न

* महावीर स्वामी को प्राप्त ज्ञान

- → सत्य
- → अहिंसा
- → अस्तेय
- → अपरिग्रह
- → ब्रह्मचर्य

} पंचव्रत

यदि इस पंचव्रत का पालन गृहस्थ करें तो इसे अणुव्रत तथा भिक्षु करें तो महाव्रत कहा जाता है।

* महावीर स्वामी ने अपने अनुयायियों को दो भागों में वर्गीकृत किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- भिक्षु/भिक्षुणी → 5 महाव्रतों का पालन करेंगे
- श्रावक/श्राविका → 5 अणुव्रत का पालन करेंगे

* इस प्रकार महावीर स्वामी का ज्ञान 2 प्रकार का है:

1) महाव्रत → कठोर
2) अणुव्रत → उदार

जैन धर्म के दर्शन / सिद्धांत :

- अनेकांतवाद : एक वस्तु या घटना के अनेक रूप हो सकते हैं।
  - → केवलिन ही किसी वस्तु या घटना के समस्त रूपों को देख सकते हैं।

- स्यादवाद : किसी भी कार्य या घटना के होने की निश्चितता नहीं होती। इसलिए कोई भी वक्तव्य देने से पहले स्या (शायद) लगाना चाहिए।

- सप्तभंगी न्याय : किसी बात घटना को 7 तरीकों से बताया जा सकता है।
  1) है 2) नहीं है 3) है और नहीं है
  4) कहा नहीं जा सकता
  5) है किन्तु कहा नहीं जा सकता
  6) नहीं है और कहा नहीं जा सकता
  7) है, नहीं है और कहा नहीं जा सकता

* महावीर स्वामी के अनुसार संसार अजीव और जीव दोनों से मिलकर बना है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

संसार

- अजीव
  - आत्मा अचेतन अवस्था में है
  - ⇓ अंधकार है
  - ↓ 5 चीजों से मिलकर बना है
    - पुद्गल (अणु)
    - काल
    - धर्म (गति का प्रतीक)
    - अधर्म (स्थिरता का प्रतीक)
    - आकाश
- जीव
  - आत्मा चेतन अवस्था में है
  - ↓ प्रकाशमय है

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

* कर्म के जीव की तरफ प्रवाह को <u>आस्रव</u> कहा जाता है तथा कर्म का जीव की ओर प्रवाहित न होने की घटना / स्थिति को <u>संवर</u> कहा जाता है।

* जीव पर पहले के कर्मों के प्रभाव हटाने की प्रक्रिया को 'निर्जरा' कहते हैं। इससे जीव कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाता है।

* निर्वाण की प्राप्ति हेतु 'त्रिरत्न' का पालन आवश्यक है।

जैन धर्म के त्रिरत्न:

- सम्यक ज्ञान
  ⇓
  तीन तरीकों से प्राप्ति
  - → मति
  - → श्रुति
  - → अवधि
- सम्यक दर्शन/विश्वास
  ⇓
  तीर्थंकरों में विश्वास
- सम्यक आचरण/चरित्र
  ⇓
  जिसका चरित्र शुद्ध हो चुका हो, उसका आचरण करना

निर्वाण: जीव का बंधनमुक्त हो जाना

इससे निम्न की प्राप्ति होगी

- → अनंत सुख
- → अनंत ज्ञान
- → अनंत दर्शन
- → अनंत वीर्य

} अनंत चतुष्टय

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR